भगत नामदेव - सबद २५

मो कउ तारि ले रामा तारि ले ॥

रागु गोंड, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ८७३

मो कउ तारि ले रामा तारि ले ॥
मै अजानु जनु तरिबे न जानउ बाप बीठुला बाह दे ॥१॥ रहाउ ॥
नर ते सुर होइ जात निमख मै सतिगुर बुधि सिखलाई ॥
नर ते उपजि सुरग कउ जीतिओ सो अवखध मै पाई ॥१॥
जहा जहा धूअ नारदु टेके नैकु टिकावहु मोहि ॥
तेरे नाम अविल्मबि बहुतु जन उधरे नामे की निज मति एह ॥२॥३॥

सार: मनुष्य में मानसिक तौर से अज्ञानता पर क़ाबू पाने की अद्भुत क्षमता होती है जो व्यक्तिगत विकास और मुक्ति के लिए बहुत ज़रूरी है। इस बदलाव भरे सफ़र में पुरानी मान्यताओं पर सवाल उठाना और गहन समझ हासिल करना शामिल है। एक झांझे की तरह, जिसे अपनी क्षमताओं का पता नहीं होता, हम भी अक्सर स्वयं को सीमित सोच तक ही बांध लेते हैं। लेकिन, कोकून के अंदर से गुज़रने वाले बदलाव के बाद, एक सुंदर तितली बाहर आती है, यह चुनौतियों पर जीत पाने और अपने असली स्वरूप को पहचानने की शक्ति का प्रतीक है। अज्ञानता के बंधन तोड़कर, हम पूर्वाग्रहों को खत्म कर सकते हैं और अपनी सोच का दायरा बढ़ा सकते हैं जिससे अंततः अधिक समावेशी और जागरूक समाज बनाने में मदद मिलेगी।

मो कउ तारि ले रामा तारि ले ॥
मुझे चेतना के उस पार ले चलो, हे सर्वव्यापी परम सत्य, मुझे ज्ञानोदय की ओर अग्रसर करो। यह स्थिरता की खोज को दर्शाता है जो सीमित मन को द्वैत की उथल-पुथल भरी अवस्था से पार पाने में सक्षम बनाती है।

मै अजानु जनु तरिबे न जानउ बाप बीठुला बाह दे ॥१॥ रहाउ ॥
मैं अज्ञानी हूँ, मैं नहीं जानता कि इस भवसागर को कैसे पार करूँ। हे माता-पिता समान सर्वव्यापी चेतना, मुझे अपना हाथ दो। यह क्षण इस बोध का प्रतीक है कि केवल बौद्धिक प्रयास पर्याप्त नहीं है, अब समय है कि हम अनुभवात्मक ज्ञान का सहारा लें। (१)(विराम)

नर ते सुर होइ जात निमख मै सतिगुर बुधि सिखलाई ॥
एक साधारण नश्वर प्राणी, सच्चे ज्ञान द्वारा दी गई अंतर्दृष्टि के माध्यम से, पल भर में ही दिव्य स्वरूप में रूपांतरित हो जाता है। सीमित आत्म से विस्तृत एकत्व की यह चेतना दिव्यता की ओर छलांग है।

नर ते उपजि सुरग कउ जीतिओ सो अवखध मै पाई ॥१॥
मनुष्य में ही वह क्षमता उत्पन्न होती है जिससे आंतरिक स्वर्ग को जीता जा सके, यही वह माध्यम है जिसे मैंने अंपनाया है। यहाँ स्वर्ग आंतरिक परमानंद और रूपांतरण का प्रतीक है। (१)

जहा जहा धूअ नारदु टेके नैकु टिकावहु मोहि ॥
जहाँ कहीं भी अटल ध्रुव तारा और नारद, ऋषि जो सभी लोकों के ज्ञाता हैं , अपना आश्रय पाते हैं, वहाँ मुझे भी स्थिर कर दो, भले ही वह केवल एक क्षण के लिए ही क्यों न हो। यह उस केंद्रित अवस्था और विवेक के प्रति गहरी अभिलाषा को व्यक्त करता है जहाँ पहुँचकर मन पूर्णतः शांत और स्थिर हो जाता है।

तेरे नाम अविल्मबि बहुतु जन उधरे नामे की निज मति एह ॥२॥३॥
आपके नाम को ही अपना सहारा मानकर, अनेकों ने ज्ञानोदय प्राप्त किया है, नामदेव कहते हैं कि यही उनकी अपनी निजी अंतर्दृष्टि है। यहाँ आपका नाम, का संदर्भ उस सर्वव्यापी एकत्व का प्रतीक है और उस एकत्व को अनुभव करना ही, जीवंत सत्य के रूप में आंतरिक स्थिरता और आश्रय को प्राप्त करना है। (२)(३)

तत्त्व: भक्त नामदेव आध्यात्मिक विकास का एक प्रभावशाली संदेश देते हैं, सही सोच और सही तरीक़े से, कोई भी व्यक्ति ज्ञान को अपना सकता है और पल भर में अपने जीवन में गहरा बदलाव ला सकता है। अक्सर, हम अपनी चुनौतियों की विशालता से नहीं बल्कि मार्गदर्शन के लिए अपनी स्वाभाविक रूप से सोचने-समझने की क्षमता का इस्तेमाल करने की अपनी ही हिचकिचाहट से घबरा जाते हैं। इस क्षमता को पूरी तरह से अपनाकर, हम स्पष्टता पा सकते हैं और अपने नज़रिए को महज़ एक सिद्धांत से बदलकर, अपने निजी अनुभव पर आधारित सार्थक अंतर्दृष्टि में बदल सकते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com